धारावाहिक

दस हज़ार बुद्धों के लिए एक सौ गाथाएं

मा धर्म ज्योति ओशो के नव-संन्यास आंदोलन में सर्वप्रथम संन्यस्त मित्रों में से एक हैं। ओशो के साथ बिताये अंतरंग क्षणों की वार्ता को उन्होंने 'वन हंड्रेड टेल्स फॉर टेन थाउजेंड बुद्धाज़' पुस्तक में संजोया है, जो मूलतः अंग्रेज़ी भाषा में है। इस पुस्तक का कई भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। हिंदी में इसका अनुवाद मा बोधि शशि ने किया है : प्रस्तुत है :— "दस हज़ार बुद्धों के लिए एक सौ गाथाएं" की इक्तालीसवीं किश्त...

81

भविष्य में देख पाने की ओशो की क्षमता गज़ब की है। 1971 में धीरे-धीरे कुछ पाश्चात्य मित्र आकर संन्यास में दीक्षित होने लगते हैं।

बंबई की करुणा को अमेरिकन प्रतिमा के साथ न्यूयार्क में पहला ओशो ध्यान केंद्र शुरू करने के लिए वहां भेजा गया है। ओशो कहते हैं कि हजारों लोग उनके पास आना शुरू हो गए हैं और नव-संन्यास आंदोलन पूरे विश्व में जंगल की आग की तरह फैलने वाला है।

वे लक्ष्मी से और जगह खोजने को कहते हैं। एक मित्र को लिखे गए किसी पत्र में ओशो यह स्पष्ट कर देते हैं कि अब उन्हें एक ही जगह पर रहना है। उनकी यात्राएं पूरी हो चुकी हैं और अब प्यासों को कुएं के पास आना पड़ेगा।'

बंबई और उसके आस-पास की जगहों में काफी खोजबीन के बाद पूना के कोरेगांव पार्क में 33 नंबर का बंगला खरीद लिया जाता है।

21 मार्च 1974 की सुबह बहुत से मित्र वुडलैंड्स अपार्टमेंट के लिविंगरूम में ओशो का संबोधि दिवस मनाने के लिए इकट्ठे हुए हैं।

आज दोपहर ओशो कार से पूना के लिए रवाना हो जाएंगे। मा तरु कुछ और मित्रों के साथ मिलकर कीर्तन शुरू कर देती है। सभी को उनके चरण स्पर्श करने दिया जाता है और उसके बाद सबको प्रसाद मिलता है। मैं भी उनके साथ पूना जाने के लिए सुबह ही अपना सूटकेस लेकर आ जाती हूं। मैं उनके बिना बंबई में रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती। एक दफा यदि वे चले जाते हैं, तो मुझे लगता है कि बंबई मेरे लिए वीरान हो जाएगी। उत्सव कुछ घंटों तक चलता रहता है। लगभग सभी रो रहे हैं। मैं थोड़ी दूर हटकर अकेली खड़ी ओशो की ओर देख रही हूं, जिनके चेहरे पर जरा भी उद्विग्नता नहीं है। वे हमेशा की तरह शांत और तरो-ताज़ा लग रहे हैं। उनके बंबई छोड़ने से मुझ पर जरा भी असर नहीं पड़ा है क्योंकि मैं जानती हूं कि मैं पूना में उनके साथ रहने वाली हूं।

उत्सव समाप्त हो जाने के बाद ओशो अपना भोजन लेकर कुछ देर आराम करते हैं। 2.30 बजे उनकी कार फूलों से सजी तैयार खड़ी है। बहुत से लोग उन्हें विदा देने के लिए फिर से इकट्ठे हो गए हैं। ओशो नीचे आकर सबको नमस्कार करते हुए कार की ओर बढ़ जाते हैं। कुछ मित्र फूट-फूटकर रोने लगते हैं। पूरा दृश्य बहुत ही हृदय विदारक है। उनके प्रियतम उन्हें छोड़कर जा रहे हैं।

लक्ष्मी ड्राइवर की सीट पर पहले से ही बैठी हुई है, ओशो जाकर पिछली सीट पर बैठ जाते हैं। मुझे स्वामी कृष्ण अरूप की नई फिएट कार में जगह मिल जाती है और उसी कार में ओशो के चाचाजी भी आ रहे हैं। एक कार में कैमरे वाले बैठे हुए हैं जो इस ऐतिहासिक घटना की वीडियो फिल्म बना रहे हैं। कुछ ही मिनटों में सभी कारें दूसरे वाहनों आगे निकलने की कोशिश करती हुई सड़क पर दौड़ रही हैं।

अलविदा बंबई!

82

कृष्ण अरूप ओशो की कार के साथ-साथ ही चलना चाहते हैं, इसलिए वह दूसरे वाहनों को ओवरटेक करते हुए बहुत तेजी से ड्राइविंग कर रहे हैं। परिणामतः उनकी कार का एक टायर पंक्चर हो जाता है और एक वीरान सी जगह पर कार को रोकना पड़ता है। टायर बदलने जाने में करीब-करीब एक घंटा लग जाता है, और तब तक मैं एक पेड़ के नीचे बैठी-बैठी बहुत बेचैन हो रही हूं।

जब तक हम पूना पहुंचते हैं तब तक पूना के मित्रों द्वारा ओशो के स्वागत का कार्यक्रम पूरा हो चुका है। संबोधि दिवस का उत्सव बंगला नंबर 17 के सामने शुरू हो चुका है। ओशो सफेद चादर से ढकी एक बड़ी सी मेज पर आलथी-पालथी लगाकर बैठे हुए हैं। कीर्तन चल रहा है और लोग लाइन से उनके चरण छूने के लिए आ रहे हैं। काफी भीड़ है। मैं भी यह अवसर नहीं छोड़ती और एक बार फिर से उनके चरण छूने के लिए लाइन में लग जाती हूं। उनके पास होने की यह प्यास तो कभी न बुझने वाली लगती है। मैं जितना पीती हूं, उतनी ही प्यासी महसूस करती हूं। जब मैं उनके पास पहुंचती हूं, वे मुझे बड़ी शरारत भरी मुस्कान से देखते हैं, जिसका अर्थ मैं नहीं समझ पाती। उत्सव समाप्त होने के बाद ओशो उठकर खड़े हो जाते हैं और सबको नमस्कार कर लक्ष्मी के साथ बंगला नंबर 33 की ओर चले जाते हैं। मैं कुछ मित्रों के साथ भोजन करने चली जाती हूं और रात को एक होटल में ठहर जाती हूं। अब तक मैं बहुत थक भी चुकी हूं और जल्दी सो जाना चाहती हूं।

मैं ओशो के बारे में सोचती हूं और मुझे लगता है कि सारा दिन लोगों से मिल-मिलकर वे कितना थक गए होंगे। रात को अपने ध्यान के समय मैं उनके लिए प्रार्थना करती हूं कि उन्हें नई जगह पर अच्छी तरह से नींद आए।

— *क्रमशः*

(यह पुस्तक ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में उपलब्ध है)